जैविक मत्स्य पालन

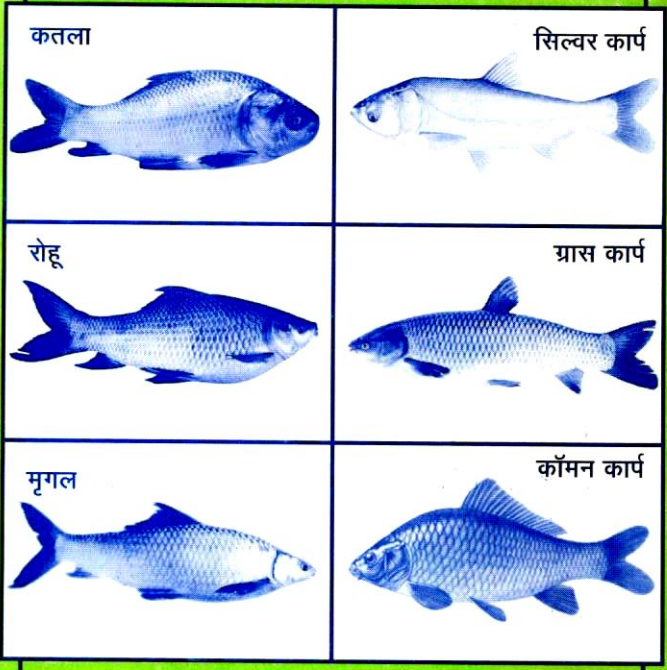

मत्स्य निदेशालय, उत्तर प्रदेश

मत्स्य भवन, 7–फैजाबाद रोड, बाबूगंज, लखनऊ–226016
दूरभाष संख्या–0522-2740483, 2740067, 2740414
2742762, 2740480,
फैक्स : 0522–2740483, 2740414
ई–मेल : fisheries.mpr@gmail.com,
blue.revo.fisheries@gmail.com, up.fish@nic.in
बेबसाइट : www.http://fisheries.upsdc.gov.in

जैविक मत्स्य पालन

कृषि तथा मत्स्य पालन की आधुनिक विधियों में रासायनिक खाद दवाईयों इत्यादि का प्रयोग होता है। अधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु सघन विधियों में इनका प्रयोग अधिक मात्रा में कृषकों द्वारा किया जाता है। प्रयुक्त रसायन विभिन्न तरीकों से जन्तुओं एवं मछलियों मे प्रवेश कर जाते है। भोजन श्रंखला के माध्यम से अन्ततः मनुष्य के शरीर में प्रवेश कर हानिकारक प्रभाव डालते हैं। जैविक मत्स्य पालन का उद्देश्य विभिन्न रासायनों का न्यूनतम प्रयोग है। स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने से संसार में जैविक खेती की ओर लोग अग्रसर हो रहे हैं। सभी लोग परंपरागत पद्धति द्वारा उत्पादित भोज्य पदार्थ स्वास्थ्य के लिये सुरक्षित व स्वादिष्ट हों, वस्तुयें पसन्द करते हैं। भारत में सरकार ने वाणिज्य मंत्रालय के सहयोग से राष्ट्रीय जैविक उत्पाद कार्यक्रम बनाया है जिसके अन्तर्गत कोई भी जैविक उत्पाद इंडिया आर्गेनिक की मुहर के बाद ही विक्रय होगा। जैविक उत्पादों की मांग निरन्तर बढ़ रही है जिसे दृष्टिगत रखते हुये देश में सब्जी, फल, पशु व जन्तुओं का जैविक उत्पादन व निर्यात प्रारम्भ हो गया है। अभी जैविक मत्स्य उत्पादन क्षेत्र में प्रगति नही हुई है। ऐसे उत्पादों हेतु स्थानीय एवं विदेशी मांग उपलब्ध है।

जैविक मत्स्य पालन के लिये तालाब तैयारी –

तैयारी के प्रथम चरण में तालाब जोतकर कुछ दिन के लिये छोड़ देते हैं। इसके बाद नमी बनाकर ढेंचा, सनई, मूँग, उर्द इत्यादि की हरी खाद की

फसल की बुआई करते हैं। यह हरी खाद मृदा की उर्वरक शक्ति बढ़ाती है तथा खरपतवार व जन्तुओं/कीड़ों को उत्पन्न होने से रोकती है। ढेंचा अन्य फसलों की अपेक्षा अधिक नत्रजन प्रदान करता है। फसल बोने के 2–3 सप्ताह बाद फूल आने से पूर्व उसकी अच्छी तरह जुताई कर देते हैं इससे तालाब में नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटेशियम की पूर्ति हो जाती है। ढेंचा में शुष्क भार के अनुसार 3.3 प्रतिशत नाइट्रोजन, 0.7 प्रतिशत फास्फोरस तथा 1.7 प्रतिशत पोटाश उपस्थित रहता है। जिन तालाबों को सुखाना संभव न हो उसमें महुआ की खली का प्रयोग 25 कुन्तल प्रति हेक्टेयर की दर से करना चाहिये इस खली में 30 प्रतिशत नाइट्रोजन, 1.3 प्रतिशत फास्फोरस, 1.4 प्रतिशत पोटेशियम होता है लेकिन महुआ की खली का प्रयोग मत्स्य बीज संचय के 30 दिन पूर्व करना चाहिये ताकि इससे विष का असर समाप्त हो जाये।

हरी खाद की जुताई के एक सप्ताह उपरांत तालाब में जल भरकर पशुओं के ताजे उत्सर्ग का प्रयोग लाभकारी है। उसमें गोबर, सूकर, बत्तख, मुर्गों के मल का प्रयोग कर सकते हैं। एक हेक्टेयर के तालाब में प्रथम बार 20 टन गोबर या 1.5 टन सूकर या 1.25 टन मुर्गी के अवशिष्ट पदार्थ डालने से प्राकृतिक प्लवक प्रचुर मात्रा में उत्पन्न हो जाते हैं जो मछली का भोजन होते है। तालाब में जलीय कीटों के नियंत्रण हेतु तेल साबुन के घोल का प्रयोग नही किया जाता है बल्कि इसके स्थान पर कीट भोजी मछलियों को थोड़ी संख्या में संचित कर देते हैं एवं जलीय वनस्पतियों के नियंत्रण हेतु ग्रास कार्प मछली का संचय करते हैं।

मत्स्य बीज संचय–

तालाब की तैयारी उपरान्त प्रति हेक्टेयर कतला, रोहू, नैन, सिल्वर कार्प, ग्रास कार्प, कामन कार्प प्रजाति की कुल 10,000 अंगुलिकाएं प्रति हेक्टेयर की दर से संचित करते हैं सिल्वर कार्प का संचय कतला के संचय के एक माह उपरान्त करना चाहिये।

पूरक आहार–

पूरक आहार के रूप में सरसों की खली व राईस ब्रान/पालिस का प्रयोग निश्चित समय पर प्रतिदिन करना चाहिये। आहार में 1 प्रतिशत नमक का प्रयोग करना चाहिये एवं आहार के वाइंन्डर्स के रूप में कोई रसायन प्रयोग में नही लाना चाहिये जँहा तक हो सके ज्वार/घिया को वाइन्र्डस के रूप में प्रयोग किया जा सकता है फॉरमुलेटिड फीड का प्रयोग पूर्णत : वर्जित है। कृषि आधारित अवयवों को विटामिन्स व मिनरल्स की पूर्ति हेतु भोजन में मिला कर देना चाहिये।

जैविक मत्स्य पालन विधिः

1. तालाब में एक मीटर जल स्तर सदैव बना रहे।
2. जलीय खर पतवार श्रमिक विधि से साफ कराये जायें व ग्रास कार्प मछली अवश्य संचित की जायें।
3. कीट नियंत्रण के लिये लार्वा भोजी मछलियाँ थोड़ी संख्या में संचित की जायें एवं 50 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से नीम की खली का प्रयोग लाभकारी है।

4. तालाब में गोबर व अन्य जन्तु उत्सर्ग एक माह में एक बार से अधिक प्रयोग नही करें।

5. जहाँ तालाब में जल भरने की व्यवस्था हो तालाब में जल ऊँचाई से छोड़ा जाय ताकि ऑक्सीजन की पर्याप्त आपूर्ति हो अथवा एरेटर का प्रयोग लाभकारी है।

6. यदि संभव हो तालाब के जल का कुछ भाग निकाल कर नया जल भर दिया जाये।

7. सप्ताह में एक बार 5 किग्रा पूरक आहार में 1 से 2 ग्राम हींग का प्रयोग किया जाये एवं तीन माह में एक बार 1 टन पूरक आहार 1.5 लीटर अरण्डी का तेल मिला कर दिया जाये जिससे मछली की आहार नाल साफ हो जाती है व उसे भूख लगने लगती है।

8. तालाब के बंधो पर केले के वृक्षारोपण करने से तालाब में आक्सीजन की मात्रा बढ़ती है।

9. मछली को रोग लगने पर 25 किग्रा हल्दी व 25 किग्रा नमक का घोल तालाब में छिड़कना लाभकारी है।

इस विधि से तैयार जैविक मछली अच्छा बाजार मूल्य कृषकों को देगी एवं उनके उत्पाद के निर्यात की संभावनाएँ भी बढ़ेंगी।

मत्स्य निदेशालय, उत्तर प्रदेश

मत्स्य भवन, 7–फैजाबाद रोड, बाबूगंज, लखनऊ–226016
दूरभाष संख्या–0522-2740483, 2740067, 2740414
2742762, 2740480,
फैक्स : 0522–2740483, 2740414
ई–मेल : fisheries.mpr@gmail.com,
blue.revo.fisheries@gmail.com, up.fish@nic.in
बेबसाइट : www.http://fisheries.upsdc.gov.in